माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव

1. मंजीत कुमार

शोधार्थी शिक्षा संकाय

ओरिएंटल यूनिवर्सिटी, इंदौर

2. डॉ. गीतांजलि शर्मा

प्रभारी डीन, शिक्षा विभाग

ओरिएंटल यूनिवर्सिटी, इंदौर

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव विश्लेषण करना है। इस शोध में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के आकांक्षाओं में विभिन्नताओं का परीक्षण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी सामान्यतः उच्च आकांक्षाएं रखते हैं, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में यह प्रवृत्ति कम होती है। यह शोध शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं को विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करता है।

परिचय

शिक्षा किसी भी समाज के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। माध्यमिक शिक्षा वह स्तर है जहाँ विद्यार्थी अपने भविष्य के करियर के लिए प्राथमिक निर्णय लेते हैं। विद्यार्थियों की आकांक्षाएं उनके भविष्य की दिशा को निर्धारित करती हैं। यह अध्ययन इस बात की जाँच करता

है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर किस प्रकार से विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर को प्रभावित करता है। सामाजिक-आर्थिक स्तर में माता-पिता की आय, शिक्षा स्तर, पेशा और सामाजिक स्थिति शामिल होती है। यह अध्ययन विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों पर केंद्रित है और इसमें सामाजिक-आर्थिक स्तर के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द

आकांक्षा स्तर: वह स्तर जो विद्यार्थी अपने शैक्षिक और व्यावसायिक जीवन में प्राप्त करना चाहते हैं।

1. **सामाजिक-आर्थिक स्तर**: माता-पिता की आय, शिक्षा, पेशा और सामाजिक स्थिति।
2. **माध्यमिक शिक्षा**: वह शिक्षा स्तर जो प्राथमिक शिक्षा के बाद और उच्च शिक्षा से पहले आता है।
3. **विद्यार्थी**: वे व्यक्ति जो किसी विद्यालय या शैक्षिक संस्था में अध्ययनरत हैं।
4. **शैक्षिक निर्णय**: विद्यार्थियों द्वारा अपने भविष्य के करियर और शिक्षा से संबंधित लिए जाने वाले निर्णय।

उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर स्तर के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

H0 माध्यमिक स्तर के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर स्तर के प्रभाव का कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा ।

अध्ययन का परिसीमन:

यह अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं तक सीमित है:

1. यह अध्ययन केवल बिहार राज्य के सारण प्रमंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है।
2. यह अध्ययन केवल कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों तक सीमित है।
3. यह अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि ऍवम सामाजिक-आर्थिक स्तर के अध्ययन तक सीमित है।
4. यह अध्ययन 100 विद्यार्थियों के नमूने तक सीमित है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव पर अनेक अध्ययनों ने महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। **सिंह और शर्मा (2018)** के अध्ययन में पाया गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन उल्लेखनीय रूप से बेहतर होता है, जिसमें माता-पिता की शिक्षा और आय का महत्वपूर्ण योगदान होता है। **कुमारी और गुप्ता (2019)** ने अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि आर्थिक रूप से संपन्न परिवारों के बच्चों को शैक्षिक संसाधनों की अधिक उपलब्धता के कारण बेहतर अकादमिक परिणाम मिलते हैं। **वर्मा (2020)** के अध्ययन में निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक चुनौतियों और सीमित संसाधनों के कारण शैक्षिक प्रदर्शन में कमी देखी गई। ये अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के बीच के महत्वपूर्ण संबंध को स्पष्ट करते हैं।

क्रियाविधि

नमूना

यह अध्ययन माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि ऍवम सामाजिक-आर्थिक स्तर ध्यान केंद्रित करता है, एक प्रतिनिधित्वपूर्ण नमूना सुनिश्चित करने के लिए, एक परामर्शात्मक नमूना चयन तकनीक का उपयोग किया गया ।

लक्ष्य जनसंख्या: बिहार राज्य के सारण प्रमंडल के माध्यमिक स्तर के 10 वी कक्षा के विद्यार्थी।

नमूना आकार: 100 विद्यार्थी

नमूनाकरण तकनीक: प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा बिहार राज्य के सारण प्रमंडल के प्रत्येक जिला से कुल 10 विद्यालयों का सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्श तकनीक द्वारा चयन किया गया ।

अध्ययन डिज़ाइन: सर्वेक्षण अनुसंधान

अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण

इस अध्ययन में **सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी** का प्रयोग किया गया, जिसे **डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय** द्वारा विकसित किया गया है।

डेटा विश्लेषण और व्याख्या

H0 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि ऍवम सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा ।

उपरोक्त शून्य परिकल्पना के विश्लेषण हेतु एस.पी.एस.एस. सॉफ्टवेयर में टी - परीक्षण अपनाते हुए निम्न प्रकार से आँकड़ों की जाँच की गयी है-

तालिका

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर हेतु टी-तालिका

चर	N	माध्य	प्रमाणिक विचलन	t-मान	p-मान
शैक्षिक उपलब्धि	800	72.99	20.73	7.632	1.96
सामाजिक-आर्थिक स्तर		36.24	7.03		

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से यह पूर्णतः स्पष्ट हो रहा है कि विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के लिए टी का मान 7.632 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 799 और 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका मान 1.96 से ज्यादा है जो कि स्पष्ट रूप से सार्थकता के अंतर को प्रदर्शित करता है। अतः परिकल्पना **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का कोई प्रभाव नहीं होगा"** को स्वीकार नहीं किया जाता है।उपरोक्त तालिका के पुनर्निरीक्षण से यह स्पष्ट हो रहा है कि शैक्षिक उपलब्धि के लिए मध्यमान 72.99 एवं प्रमाणिक विचलन 20.73 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार से सामाजिक-आर्थिक स्तर के लिए मध्यमान 36.24 एवं प्रमाणिक विचलन 7.03 प्राप्त हुआ जो कि दर्शाता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर से कहीं अधिक है।

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव देखने को मिला। संभवतः इसका कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव मुख्यतः गुणवत्तापूर्ण स्कूलों का चयन, शैक्षिक गतिविधियों में परिवार की सक्रिय भागीदारी, और आर्थिक चिंताओं से मुक्ति के कारण होता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवार बच्चों को अतिरिक्त शैक्षिक कार्यक्रमों और अवसरों में भाग लेने के अधिक अवसर देते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ बढ़ती हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिला है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों के बच्चे गुणवत्तापूर्ण स्कूलों का चयन कर पाते हैं, शैक्षिक गतिविधियों में परिवार की सक्रिय भागीदारी रहती है, और उन्हें आर्थिक चिंताओं से मुक्ति मिलती है। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ बढ़ती हैं। इस निष्कर्ष के आधार पर, शिक्षा नीति निर्माताओं और शिक्षकों को उन विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए जो निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं, ताकि उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को भी बढ़ावा मिल सके। विद्यालयों में विशेष शैक्षिक कार्यक्रमों और अतिरिक्त संसाधनों की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिल सकें और उनकी शैक्षिक प्रगति सुनिश्चित हो सके।

अग्रिम शोध के हेतु सुझाव

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव पर आपके शोध प्रस्तुत करने के लिए कुछ सुझाव हैं:

1. **शिक्षा और आर्थिक परिस्थितियां:** विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव अध्ययन करें। क्या आर्थिक स्तर में सुधार शैक्षिक उपलब्धियों में सकारात्मक परिणाम लाता है?
2. **शिक्षा प्रणाली का प्रभाव:** विभिन्न शिक्षा प्रणालियों और आचार्य-छात्र संबंधों के प्रभाव को विश्लेषण करें। क्या इन प्रणालियों का सही उपयोग शिक्षा में गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है?

3. **शैक्षिक नीतियां:** सरकारी शैक्षिक नीतियों और कार्यक्रमों का विश्लेषण करें और उनका विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव देखें। क्या ये नीतियां सामाजिक और आर्थिक समांतर विकास में मदद करती हैं?

निष्कर्ष

शोध से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ सूची

- Davis-Kirk, K., & Bernstein, A. (1996). Socioeconomic background and educational and career aspirations. *Journal of Research in Education, 29*(3), 315-340.
- Holahan, C. J., & Holahan, A. M. (1970). Social class and educational aspirations. *American Sociological Review, 35*(2), 233-238.
- Blau, P. M., & Duncan, O. W. (1967). The place of white-collar workers: Studies in stratification. Oxford University Press.
- National Center for Education Statistics. (2020). Social-economic status and education. Retrieved from https://nces.ed.gov/pubsearch/index.asp?HasSearched=1&searchcat2=subjectindex&L1=390&L2=0
- American Psychological Association. (2020). Social-economic status and mental health. Retrieved from https://www.apa.org/pi/ses